ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 219-220

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

उत्तर प्रदेश में महिला स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का योगदान

1. डॉ0 प्रीति सिंह
2. डॉ0 अभिषेक कुमार सिंह

1. एम.ए., बी.एड., पी–एच0डी0, 2. असिस्टेंट प्रोफेसर–वाणिज्य एवं व्यावसायिक प्रशासन संकाय एम.एम.एच. कॉलेज, गाजियाबाद (उ0प्र0), भारत

Received- 01.03.2022, Revised- 06.03.2022, Accepted - 09.03.2022 E-mail: preetysingh963@gmail.com

सारांशः – *भारत वर्ष के सम्पूर्ण इतिहास सभ्यता और संस्कृति पर दृष्टिपात करे तो उत्तर प्रदेश का अपना अलग ही एवम महत्वपूर्ण स्थान रहा, उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता से इतिहास के अनेकों पृष्ठ रंग हुये है। कहा जाता है, कि आर्यों को उत्तर प्रदेश की मिट्टी से बेहतर मिट्टी कही नही मिली और वो यहीं आकर बस गये।[1] पुरातात्विक उत्खननों से भी हिन्दु और बौद्ध धर्म से सारोकार रखने वाले विभिन्न नगर इसी पावन प्रदेश में पाये गये।*

कुंजीभूत शब्द– इतिहास सभ्यता, संस्कृति दृष्टिपात, सांस्कृतिक विविधता, पृष्ठ रंग, पुरातात्विक उत्खननों, सारोकार।

उत्तर प्रदेश भारत वर्ष के उत्तरी भाग में स्थित एक विशाल एवम महत्वपूर्ण राज्य है, जिसका कुल क्षेत्रफल 2,40,298 वर्ग किमी है, जो दशे के क्षेत्रफल 8.97 प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश सम्पूर्ण देश का एक ऐसा राज्य है, जो सम्पूर्ण देश में राजनैतिक रुप से बहुत सक्रिय और सशक्त माना जाता है, जो सम्पूर्ण देश को राजनैतिक नेतृत्व की दिशा और दशा प्रदान करता है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति मूल्यों एवं परम्पराओं को सहेज कर रखने का कार्य प्रारम्भ से ही स्त्रियों के द्वारा सम्भव हो सका और निश्चित रुप से भारतीय महिलाओं ने समाज के संघर्षों में अपना योगदान देकर इसको एक गति प्रदान की।[2] उत्तर प्रदेश में महिलाओं का सशक्तिकरण एक बड़ी संख्या में देखने को मिलता है, महिलाओं ने हर उस क्षेत्र में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया जिसकी जरूरत समय–समय पर देश, समाज, परिवार को पड़ी। उत्तर प्रदेश की मिट्टी ने ऐसी–ऐसी वीरांगनाओं को जन्म दिया जिन्होंने न सिर्फ इतिहास के रुप को बदलने पर मजबूर किया अपितु विश्व को भी विस्मित कर दिया। उत्तर प्रदेश आरम्भ से ही राजनीति के केन्द्र बिन्दु में रहा, क्योंकि सारी गतिविधियाँ यहीं से प्रारम्भ होती थी फिर महिलाएँ भला कैसे पीछे हो सकती थी फिर चाहे प्राचीन काल की विदुषी महिलाएं हो या मध्यकाल की पहली महिला फेमिनिस्ट नूरजहाँ[3] हो, या फिर अंग्रेजों द्वारा किये गये अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने एवं आजादी पाने के लिये 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में धूल चटाने वाली झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई हो या अवध की बेगम हजरत महल हो, इनके जैसी अनेक साहसी और निर्भीक महिलाएँ उत्तर प्रदेश की धरती से आयी। अंग्रेजों को इस बात का बखूबी अंदाजा था, कि राष्ट्रीय चेतना की लहर सम्पूर्ण भारत वर्ष में फैल रही है, जिसके चलते ही नित्य नवीन नियमों और अधिनियमों के माध्यम से वे अपनी कूटनीतिक चाल चल रहे थे। सन् 1916–1947 ई0 का जो कालखण्ड था वो महिलाओं के लिये इसलिये भी महत्वपूर्ण था क्योंकि उत्तर प्रदेश के संघर्षशील नेताओं के सम्पर्क और प्रभाव में महिलाएँ आयी जिसके चलते नारी संघर्ष को गति प्राप्त हुयी। इसी दशक में भारत में थियोसिफिकल सोसाइटी की आधारशिला आयरिश मूल की विदेशी महिला मैडम ब्लाडी परक ने[4] रखी जिसमें महिलाओं को राजनीति में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेने का मौका मिला। पहली बार उत्तर प्रदेश की महिलाएं श्रीमती नायडु एवं अनेक समर्थक महिलाओं ने 'मार्लेमिन्टो' अधिनियम का विरोध किया, क्योंकि इस अधिनियम में महिलाओं को मताधिकार नहीं प्रदान किया गया था, हालांकि महिलाओं ने पहली बार सन् 1926 में प्रथम बार चुनाव में भाग लिया जिसमें मुट्ठी भर ही महिलायें विधान सभा तक पहुँचने में कामयाव हो सकी। महिलाओं में राजनीतिक चेतना जाग्रत करने के लिये सन् 1927 में गैर राजनीतिक संगठन 'अखिल भारतीय सम्मेलन' की स्थापना की गयी।

उत्तर प्रदेश से जिन महिलाओं ने इस संगठन में प्रमुख भूमिका निभायी उनमें मुख्य रुप से श्रीमती मार्गेट, श्रीमती चंदावती, लखनपाल, मुकुन्द मालवीय एवं उमा नेहरू जी थी। सर्वप्रथम 1935 के अधिनियम में महिलाओं को मताधिकार प्रदान करने की मांग उठायी गयी परन्तु यह स्वीकार नहीं किया गया। 1935 का जो भारत शासन अधिनियम था उसमें अनेक महिलायें जो उत्तर प्रदेश की माटी से आती थी, वे इस अधिनियम की सदस्या रही। स्वतन्त्रता के उपरान्त जब भारत का संविधान बनाया गया तो उत्तर प्रदेश में विधान सभा के सदस्यों की संख्या 228 थी, जो बाद में बढ़ कर 232 हो गयी, जिसमें प्रथम विधान सभा में सिर्फ 9 महिलायें ही चुन कर विधायिका में जा सकी अर्थात सिर्फ 3.98: महिलायें ही पहुंच सकी। उत्तर प्रदेश की राजनीति में सरोजनी नायडु का योगदान अविस्मरणीय रहा है जो एक राजनीतिज्ञ होने के साथ ही साथ एक शान्ति दूत के रुप में जानी जाती रही है। सरोजनी जी का पालन पोषण बेहद ही उन्मुक्त वातावरण में हुआ, ये उन दिनों इंग्लैण्ड उच्च शिक्षा के लिये गयी जब महिलाओं को घर की चाहर दीवारी से बाहर भी नहीं भेजा जाता था। भारतीय राजनीति में गाँधी जी के पदार्पण के पहले से ही वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़ी हुयी थी। सन् 1909 में 'सोशल सर्विस कान्फ्रेंस' में भाग लेकर 'हिन्दु विधवाओं' की रक्षा के लिये प्रस्ताव पेश किया और यह पुरजोर आवाज उठायी कि जब तक देश की नारी

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

समाज को अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं किया जायेगा तब तक भारत की स्वतन्त्रता मात्र एक कल्पना स्वरुप होगी।[5] भारत के स्वाधीन होने के उपरान्त कांग्रेस मंत्रिमण्डल के गठन पर इन्हें उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के रुप में नियुक्त किया गया।

उत्तर प्रदेश की महिला राजनीतिज्ञों की बात की जाये तो श्रीमती सुचेता कृपलानी का कोई सानी नहीं था, आजादी के पहले और आजादी के बाद सुचेता जी ने जिस प्रकार से अपने को हर संघर्ष में और लड़ाई में अब्बल रखा वो काबिले तारीफ है, 1939 के दौर में जब सुचेता जी सक्रिय रुप से कार्यकर्ता के तौर पर जुड़ गयी और महिला कांग्रेस में सचिव नियुक्त हुयी। 1942 में जब पूरे भारत वर्ष में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' चरम पर था। सुचेता जी ने भूमिगत होकर ब्रिटिश विरोधी कार्य को चालू रखा।6 1946 में वे उत्तर प्रदेश से असेम्बली के लिये चुनी गयी तथा स्वतंत्रता उपरान्त 1952, 1967 और 1971 में लोकसभा के लिये चुनी गयी। सुचेता जी को 1963 में उत्तर प्रदेश की प्रथम महिला मुख्यमंत्री होने का गौरव प्राप्त हैं।

भारत की राजनीति हो या स्वतंत्रता संग्राम नेहरू परिवार के योगदान को नकारा नहीं जा सकता, विजय लक्ष्मी जो कि जवाहर लाल नेहरू की बहन थी, एक ऐसी शख्सियत रही जिनके नाम के आगे बहुत सारी उपलब्धियां रही, जिसका जिक्र इनकी आत्मकथा 'द स्कोप आफ हैप्पीनेस' में इन्होंने स्वयं किया है। 16 वर्ष की अल्पायु में विजय लक्ष्मी जी ऐनी बेसेन्ट के होम रूल में शामिल होना चाहती थी, परन्तु उम्र कम होने के कारण अल्पायु में उन्हें इलाहाबाद कार्यालय में लिफाफे पर पता लिखने एवं संदेश ले जाने का कार्य सौपा गया। विजय लक्ष्मी जी 1940 से 1942 तक अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की अध्यक्षा रही।[7] स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान बंगाल में फैले हुये अकाल एवं हैजा को रोकने के लिये विजय लक्ष्मी जी ने 'बालक बचाओ कोष' स्थापित किया। विजय लक्ष्मी जी भारतीय संविधान का निर्माण करने वाली संविधान सभा की सदस्या भी रही, साथ ही साथ 1952 तथा 1964 में दो बार लोकसभा के लिये निर्वाचित हुयी।[8] विजय लक्ष्मी जी 1953 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की प्रथम निर्वाचित महिला तथा (एक मात्र भारतीय) अध्यक्षा रही। यदि पूरब की बेटी बेनजीर भुटटो को कहा जाता है, तो इन्दिरा गाँधी भारत की बेटी रही, जिनका जन्म उत्तर प्रदेश के उस शहर में हुआ जो विद्वता तर्क और ऊथल–पुथल का नगर था।[9] इन्दिरा जी ने बहुत छोटी सी उम्र में उत्तरदायित्व की गहनतम चेतना भर आयी थी। अपनी शिक्षा उपरान्त जब भारत आयी तो सर्वप्रथम यहां की महिलाओं को एकत्र कर यह समझाने की पुरजोर कोशिश की। स्वतंत्रता की लड़ाई एक ऐसी लड़ाई है, जो अकेले पुरुष जाति नहीं लड़ सकती, 1930 के दौर में जब भारत में स्वतंत्रता संग्राम जोरो पर था तो इन्दिरा जी के कहने पर बहुत सी महिलाये जुलुसो और धरना प्रदर्शन में शामिल हुयी, इस दौरान इन्दिरा जी जेल भी गयी। स्वतंत्रता उपरान्त 1955 में इन्दिरा जी कांग्रेस कार्यकारिणी समिति में सम्मिलित की गयी और महिला विभाग का कार्य सौपा गया। 1959 में इन्दिरा जी को कांग्रेस का अध्यक्ष चुना[10] गया, 27 जनवरी 1966 को भारत के प्रधानमंत्री की शपथ ली। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में एक ओर जहाँ महिलाएं अभी पर्दे के आड़ में थी उस गणतन्त्र में एक महिला को अपने राष्ट्र के इतने बड़े पद पर चुना जाना ये एक अविस्मरणीय पता था। एक तरफ जहाँ उत्तर प्रदेश की वीर नारियों ने अपने अदम्य साहस के बल पर अपने प्रभुत्व के होने वाले हनन को बचाया वहीं दूसरी ओर घर की चाहर दीवारी के अन्दर ही रहकर क्रान्ति की ज्वाला सुलगाने में साथ दिया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. विकीपीड़िया– उत्तर प्रदेश का इतिहास।
2. विवेकानन्द– हिन्दु धर्म, पृष्ठ–76.
3. सिंह, लता, राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाएं, भूमिका के सवाल, 2001, पृष्ठ–156.
4. माडर्न रिव्यू, वाल्यूम 27, जनवरी सन् 1929, पृष्ठ–45.
5. हिन्दू पेट्रियाट, 8 मार्च, 1909.
6. कृष्णा हाटिर्गं (1980) 'इन्दू से प्रधानमंत्री' (2005)
7. कांग्रेस प्रेसीडेन्सियल एड्रेस
8. एनबुल रजिस्टर, वाल्यूम 1, जनवरी, जून 1932, पृष्ठ–24.
9. कृष्णा हार्टिंग इन्दू से प्रधानमंत्री (1980), पृष्ठ–1.
10. टाइम्स ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 8 फरवरी, 1959

*****